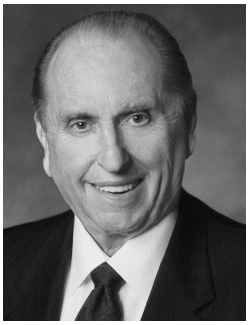

अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन द्वारा

एक उदाहरण और प्रकाश बनें

जब हम उद्धारकर्ता के उदाहरण का अनुसरण करते हैं, तो हमें दूसरों के जीवन में प्रकाश बनने का मौका मिलेगा ।

भाइयों और बहनों, एक बार फिर आपके साथ होना बहुत अच्छा लग रहा है ।

जैसा आप जानते हैं, जब हम अप्रैल में मिले थे उसके पश्चात, हमारे तीन प्रिय प्रेरित, अध्यक्ष बोएड के. पैकर, एल्डर एल. टॉम पैरी, और एल्डर रिचर्ड जी. स्कॉट हमारे बीच नहीं रहे । वे अपने स्वर्गीय घर वापस चले गए हैं । हम उन्हें याद करते हैं । हम उनके मसीह समान प्रेम के उदाहरण और प्रेरणादायक शिक्षाओं के बहुत आभारी हैं जो उन्होंने हमारे लिये छोड़ी हैं ।

हम अपने नवीनत्तम प्रेरितों, एल्डर रॉनल्ड ए. रसबैंड, एल्डर गैरी ई. स्टीवनसन, और एल्डर डेल जी. रेनलंड का हार्दिक स्वागत करते हैं । ये प्रभी के कार्य में समर्पित लोग हैं । ये उन महत्वपूर्ण पदों का स्थान लेने के योग्य हैं जिनमें इनकी नियुक्ति हुई है ।

हाल ही में, जब मैं धर्मशास्त्रों का अध्ययन और मनन कर रहा था, दो अध्याय विशेषरूप से मेरे विचारों में समा गए । दोनों से हम परिचित हैं । पहला पहड़ी उपदेश में से है: ''तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें ।''[1] दूसरा धर्मशास्त्र मेरे मन में उस समय आया जब मैं पहले पर मनन कर रहा था । यह तीमूथियस को लिखी प्रेरित पौलुस की पत्री से है: ''वचन, और चाल चलन, और प्रेम, और विश्वास, पवित्रता में विश्वासियों के लिये उदाहरण बन जा ।''[2]

मैं विश्वास करता हूं दूसरा धर्मशास्त्र बहुत हद तक, स्पष्ट करता है, कि हम कैसे पहले का अनुसरण कर सकते हैं । हम वचन, और चाल चलन, और प्रेम, और विश्वास, पवित्रता में विश्वासियों के लिये उदाहरण यीशु मसीह के सुसमाचार के अनुसार जीवन जी कर बनते हैं । जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारा प्रकाश इतना चमकेगा कि दूसरे इसे देख सकेंगे ।

हम में से प्रत्येक पृथ्वी पर मसीह के प्रकाश के साथ आया है । जब हम उद्धारकर्ता के उदाहरण का अनुसरण करते और उस प्रकार जीवन जीते हैं जैसे उसने जीया और उसने सीखाया था, तो प्रकाश हमारे मन में उत्तेजना उत्पन्न करेगा और प्रकाश दूसरों को रास्ता दिखायेगा ।

प्रेरित पौलुस विश्वासियों के छह गुणों को बताता है, गुण जो हमारे प्रकाश को चमकने में मदद करेंगे । हम इन में से प्रत्येक पर चर्चा करते हैं ।

मैंने दो गुणों को एक साथ बताया है-शब्द और बातचीत में उदाहरण होने के लिये । शब्द जिनका हम उपयोग करते हैं ऊपर उठा और प्रेरणा दे सकते हैं, या ये चोट पहुंचा और नीचा दिखा सकते हैं । आज के संसार में जहां भी हम जाएं हम अपने आस-पास अत्याधिक अभद्रता और गाली गलौज पाते हैं । ईश्वर के नाम को यूं ही बिना विचार के लिये जाना बहुत आम हो गया है, इससे बच पाना कठिन है । टीवी, फिल्म, किताबों, और संगीत में भद्दी टिप्पणियां होना सामान्य बात हो गई है । अपमा'जज'नक टिप्पणियां बोलना-सुनना और क्रोध भरी भाषा का उपयोग बहुत आम है । हमें दूसरों के साथ सदा प्रेम और आदर से, अपनी भाषा को शुद्ध और मधुर रखते हुए बातें करनी चाहिए और ऐसे शब्दों या टिप्पणियों से बचना चाहिए जो चोट या अपमान कर सकते हैं । हमें उद्धारकर्ता के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए, जिसने अपनी संपूर्ण सेवकाई में सयंम और दया से बातें की थी ।

पौलुस द्वारा बताया गया दूसरा गुण उद्धारता है, जिसे ''मसीह के शुद्ध प्रेम''[3] के रूप में परिभाषित किया गया है । मुझे भरोसा है, जो अकेले हैं, बीमार हैं, और जो निराशा महसूस करते हैं हम उन पर प्रभाव डालने के योग्य हैं । हमारे पास उनकी सहायता करने और उनकी आत्माओं को ऊपर उठाने के मौके हैं । उद्धारकर्ता ने निराश को आशा और कमजोर को ताकत दी । उसने रोगी को चंगा किया, और लंगड़ों को चलाया, अंधों को आंखें दी, बहरे को सुनने की क्षमता । उसने मरे हुओं को भी जिलाया । अपनी पूरी सेवकाई में वह हर किसी जरूरतमंद के पास उद्धारता से पहूंचा । जब हम उसके उदाहरण की नकल करते हैं, तो हम स्वयं के जीवनों से दूसरों के जीवन को आशीषित करेंगे ।

दूसरा, हमें अपने गुणों द्वारा भी उदाहरण बनना है । इसका मेरे लिये अर्थ है कि हमें अपने जीवनों में दया, आभार, क्षमा, और भलाई को लाने का प्रयास करना है । यह गुण हमें ऐसी आत्मा देंगे जो हमारे आसपास के लोगों के जीवनों को छुएगी । मुझे अपने जीवन में ऐसे अनगिनत लोगों के साथ होने के मौके मिले हैं जिनमें इस प्रकार की आत्मा है । हमें एक विशेष अनुभूति होती है जब हम ऐसे

लोगों के साथ होते हैं, ऐसी अनुभूति जो हमें उनके साथ को चाहने और उनके उदाहरण पर चलने की प्रेरणा देती है । वे मसीह के प्रकाश को रोशन करते और उसके प्रेम को महसूस करने में मदद करते हैं ।

उस प्रकाश को समझाने के लिये जो शुद्ध और प्रेममय आत्मा से आता है जिसे दूसरे पहचानते हैं, मैं एक अनुभव को बांटता हूं जो कई साल पहले हुआ था ।

उस समय, गिरजे के मार्गदर्शक यरूशलेम के अधिकारियों से जमीन लेने के सिलसिले में मिले थे, जिसमें गिरजे के यरूशलेम केंद्र का निर्माण होना था । जरूरी अनुमत्ति पाने के लिये, गिरजे को इस बात पर सहमत होना था कि हमारे सदस्य जो केंद्र में होंगे कोई धर्म संबंधी प्रचार नहीं करेंगे । इस समझौते को करने के बाद, एक इस्राएली अधिकारी, जोकि गिरजे और इसके सदस्यों को अच्छी तरह जानता था, ने कहा कि उसे पूरा भरोसा था कि गिरजा प्रचार न करने के समझौते का पालन करेगा । ''लेकिन'' वह बोला, उन विद्यार्थियों की ओर इशारा करते हुए जो वहां उपस्थित थे, ''हम उनकी आखों के प्रकाश के विषय में क्या करने जा रहे हैं ?''[4] यह विशेष प्रकाश हमेशा हमारे भीतर चमकना चाहिए, ताकि यह दूसरों द्वारा पहचाना जाए और इसकी प्रशंसा की जा सके ।

विश्वास का उदाहरण होने का अर्थ है कि हम प्रभु में और उसके वचन में भरोसा करें । इसका अर्थ है कि हम उस विश्वास को धारण और पोषण करें जो हमारे विचारों और कार्यों का मार्गदर्शन करेगा । प्रभु यीशु मसीह में और हमारे स्वर्गीय पिता में हमारा विश्वास हमारे कार्य को प्रभावित करेगा । हमारे युग की अव्यवस्था, विचारों के मतभेद, और प्रतिदिन के जीवन की बेचैनी के बीच, स्थायी विश्वास रूपी लंगर का काम करता है । मैं जोर देता हूं जो हम से बार बार कहा गया है-धर्मशास्त्र पर मनन करें । प्रार्थना के द्वारा हमारे स्वर्गीय पिता के साथ बातचीत जरूरी है । हम इन बातों की अवहेलना नहीं कर सकते, क्योंकि शैतान और उसकी सेना, हमारी कमजोरियों, हमारी विश्वनीयता में गिरावट का लाभ उठाने का भरसक प्रयास कर रहे हैं । प्रभु ने कहा है, ''परिश्रम से खोजो, हमेशा प्रार्थना, और विश्वास करते रहो, और सब बातें मिलकर तुम्हारी भलाई के लिये होंगी ।''[5]

अंत मं, हमें शुद्ध होना चाहिए, जिसका अर्थ है अपने शरीर, मन और आत्मा को स्वच्छ रखना । हम जानते हैं कि हमारा शरीर एक मंदिर है, जिसके साथ श्रद्धा और आदर से व्यवहार किया जाना चाहिए । हमारे मन ऊपर उठाने वाले विचारों से भरे और सब से मुक्त होने चाहिए जो इसे गंदा करते हैं । पवित्र आत्मा को हमारा स्थाई साथी होने के लिये, हमें इसके योग्य होना चाहिए । भाइयों और बहनों, शुद्धता हमें मन की शांति देती है और

उद्धारकर्ता की प्रतिज्ञाओं को पाने के योग्य बनाती है । उसने कहा है, ''धन्य हैं वे जो मन के शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे ।''[6]

जब हम वचन, और चाल चलन, और प्रेम, और विश्वास, पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बनते हैं, तो हम इस संसार के प्रकाश बनने के योग्य होंगे ।

मैं आप सब से कहना चाहता हूं, और विशेषकर युवा लोगों से, कि जब संसार प्रेमी स्वर्गीय पिताद्वारादिये नियमों और निर्देशों से दूर और बहुत होता जा रहा है, हम औरों से अलग नजर आएंगे क्योंकि हम भिन्न हैं । हम भिन्न हैं क्योंकि हम सभ्य पोशाक पहनते हैं । हम भिन्न हैं क्योंकि हम भद्दी भाषा का प्रयोग नहीं करते और क्योंकि हम उन पदार्थों को नहीं लेते जो हमारे शरीर के लिये नुकसानदायक हैं । हम भिन्न हैं क्योंकि हम मीडिया की अनैतिक और अपमानजनक बातों से अपने मनों को न भरने का चुनाव करते हैं, जो हमारे घरों और हमारे जीवनों से आत्मा को हटा देगी । हम निश्चितरूप से अलग होंगे जब हम नैतिकता से संबंधित चुनाव करते हैं–चुनाव जो सुसमाचार सिद्धांतों और आदर्शों से मेल खाते हैं । वे बातें जो हमें बाकी संसार से अलग करती हैं हमें ऐसा प्रकाश और ऐसी आत्मा भी देती है जो अत्याधिक अंधरे संसार में चमकेगी ।

अक्सर भीड़ में अलग होना और भिन्न करना कठिन होता है । डर लगता है कि दूसरे क्या सोचेंगे या कहेंगे, यह स्वाभाविक है । भजन संहिता के वचन दिलासा देते हैं: ''प्रभु मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूं ? प्रभु मेरे जीवन की शक्ति है, मैं किस का भय खाऊं ?''[7] जब हम अपने जीवनों को मसीह पर केंद्रित करते हैं, तो हमारे भय हमारे दृढ़ विश्वास के साहस में बदल जाएंगे ।

हम में से किसी के लिये भी जीवन परिपूर्ण नहीं है, और कभी कभी चुनौतियां और कठिनाइयां जिनका हम सामना करते हैं व्याकुल कर, हमारे प्रकाश को मंद कर सकती हैं । हालांकि, हमारे स्वर्गीय पिता की मदद के साथ दूसरों के समर्थन से, हम फिर से उस प्रकाश से प्राप्त कर सकते हैं जो हमारे स्वयं के मार्ग को एक बार फिर रोशन कर देगा और अन्य जरूरतमंद को भी प्रकाश उपलब्ध कराएंगे ।

इसे समझाने के लिये, मैं अपनी पसंदीदा कविता के मार्मिक शब्दों को आपके साथ बांटता हूं जिसे मैंने पहली कई साल पहले पढ़ा था:

मैं एक अजनबी से रात में मिला
जिसके दीये ने चमकना बंद कर दिया था ।
मैं ठहरा और उसे ज्योति दी ।
अपने दीये से उसके दीये को

बाद में तेज आंधी आई,
और संपूर्ण संसार को हिला गई ।
और जब आंधी रूकी ।
मेरा दीया बुझ चुका था !

लेकिन वह अजनबी मेरे पास वापस आया–
उसका दीया जल रहा था !
उसने अमूल्य ज्योति को संजोकर रखा
और मेरे दीये को आलोकित किया![8]

मेरे भाइयों और बहनों, चमकने के मौके हमारे आस-पास प्रतिदिन होते हैं, हम किसी भी परिस्थिति में अपने आपको पाएं । जब हम उद्धारकर्ता के उदाहरण का अनुसरण करते हैं, हमारे पास दूसरों के जीवन में प्रकाश बनने का मौका मिलेगा, बेशक वे हमारे स्वयं के परिवार के सदस्य हों और मित्र हों, हमारे साथ काम करने वाले, जान-पहचान वाले, या बिलकुछ अजनबी ।

मैं आप सब से कहता हूं कि आप स्वर्गीय पिता के बेटे या बेटी हो । आप उसकी उपस्थिति से इस पृथ्वी पर एक अवधि के लिये आए हो, उद्धारकर्ता के प्रेम का उदाहरण और शिक्षाओं का उदाहरण बनने और बहादूरी से अपनी ज्योति चमकाने के लिये ताकि सब देख सकें । इस जीवन के बाद, यदि आप अपना हिस्से का कार्य

किया, तो लौटकर उसके साथ हमेशा रहने की महिमापूर्ण आशीष आपकी होगी ।

हमारे उद्धारकर्ता के वचन बहुत आश्वस्त करने वाले हैं: ''जगत की ज्योति मैं हूं, जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अंधकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा ।''[9] मैं उसकी गवाही देता हूं । वह हमारा उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता है, पिता के पास हमारा सहायक है । वह हमारा प्रतिरूप और शक्ति है । वह ''ऐसा प्रकाश है जो अंधकार में रोशनी देता है ।''[10] मैं आशा करता हूं कि आप सब जो मुझे सुन रहे हैं, उसका अनुसरण करके, जगत की ज्योति बनने की प्रतिज्ञा करेंगे, उसके अर्थात प्रभु यीशु मसीह के पवित्र नाम में, आमीन ।

विवरण

1. मत्ती 5:16 ।
2. 1 तीमुथीयुस 4:12 ।
3. मोरोनी 7:47 ।
4. देखें James E. Faust, "The Light in Their Eyes," Ensign or Liahona,Nov. 2005, 20 ।
5. सिद्धांत और अनुबंध 90:24 ।
6. मत्ती 5:8 ।
7. भजन संहिता 27:1 ।
8. Lon Woodrum, "Lamps," in Love at Your Door (1977), 96 ।
9. यहून्ना 8:12 ।
10. सिद्धांत और अनुबंध 6:21 ।

© 2015 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित ।
भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमति : 6/15 । अनुवाद अनुमति : 6/15 ।
First Presidency Message, November 2015 का अनुवाद ।
Hindi । 12591 294

हमारे समय के लिये शिक्षाएं

नवंबर 2015 से अप्रैल 2016 चौथे रविवारों को मलकिसिदक पौरोहित्य और सहायता संस्था के पाठ अक्टूबर महासम्मेलन में दी गई एक या अधिक वार्ताओं से तैयार किए जाने चाहिए । अप्रैल में, वार्ताएं अप्रैल 2016 या अक्टूबर 2015 महासम्मेलनों से चुनी जा सकती हैं । स्टेक और जिला अध्यक्ष अपने क्षेत्रों के अनुसार वार्ताओं का चुनाव कर सकते हैं, या वे इस जिम्मेदारी को धर्माध्यक्षों और शाषा अध्यक्षों को सौंप सकते हैं ।

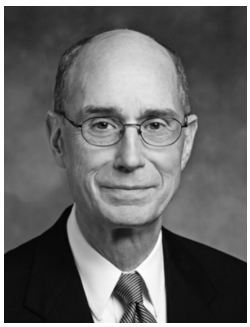

अध्यक्ष हेनरी बी. आइरिंग द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार

पवित्र आत्मा आपका साथी

यदि हम योग्य रहते हैं, तो आत्मा का हमारे साथ होने की आशीष पा सकते हैं, न केवल कभी-कभी लेकिन हमेशा के लिये ।

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, सब्त दिन प्रभु के गिरजे के इस महा सम्मेलन में आपके साथ होना का मैं आभारी हूं । मैंने महसूस किया है, जैसा आपने किया, जिन वचनों को हमने सुना है आत्मा उनकी सच्चाई की गवाही देती है ।

आज मेरा उद्देश्य हम में से प्रत्येक को हमारे बपतिस्मे के पश्चात वादा किये उपहार का दावा करने की आपकी इच्छा और आपके निश्चय को बढ़ाना है । हमारी पुष्टिकरण के दौरान हम इन शब्दों को सुनते हैं : ''पवित्र आत्मा ग्रहण करो ।''[1] उस क्षण के पश्चात, हमारा जीवन हमेशा के लिये बदल जाता है ।

यदि हम इसके योग्य बने रहते हैं, तो आत्मा को हमारे साथ होने की आशीष पा सकते हैं, न केवल कभी-कभी लेकिन हमेशा के लिये । प्रभु-भोज प्रार्थना के शब्दों से आप जानते हैं कि कैसे यह वादा पूरा किया जाता है:''हे अनंत पिता परमेश्वर, हम आपके पुत्र यीशु मसीह के नाम में मांगते हैं, इस रोटी को आशीषित और पवित्र करो उन सब प्राणियों के लिये जो इसे ग्रहण करते हैं, ताकि वे इसे आपके पुत्र के शरीर की याद में खा सकें, और आपकी गवाही दे सकें, हे परमेश्वर अनंत पिता, कि वे अपने ऊपर आपके पुत्र का नाम लेने, और सदा उसे याद रखने, और उन आज्ञाओं को मानने के इच्छुक हैं जो उसने उन्हें दी हैं, ताकि उनके साथ उसकी आत्मा सदा के लिये रह सके ।''

और फिर आता है वादा: ''ताकि उनके साथ उसकी आत्मा सदा के लिये रह सके ।'' (सिऔरअ 20:77; महत्व जोड़ा गया है) ।

हमारे साथ हमेशा आत्मा रहने का अर्थ है हमारे जीवन में प्रतिदिन पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन और निर्देशन होगा । उदाहरण के लिये, बुराई करने के प्रलोभन का विरोध करने के लिये हमें चेतावनी दी जा सकती है ।

केवल इसी कारण के लिये, यह देखना सरल है कि क्यों प्रभु के सेवकों ने प्रभु-भोज सभाओं में परमेश्वर की उपासना करने की हमारी इच्छा को बढ़ाने का प्रत्यन किया है । यदि हम प्रभु-भोज में विश्वास से भाग लेते हैं, तो पवित्र आत्मा हमें और जिनसे हम प्रेम करते हैं उन्हें प्रलोभनों से सुरक्षा देने के योग्य होगी जो अधिक तीव्रता और अंतराल के साथ आते हैं ।

पवित्र आत्मा की संगति जो अच्छा है उसे अधिक आकर्षित बनाता और प्रलोभन के आकर्षण को कम करता है । आत्मा को हमेशा हमारे साथ रहने की योग्यता को पाने का दृढ़ निश्चय करने के लिये यह कारण ही पर्याप्त है ।

ठीक जैसे हमें बुराई के विरूद्ध मजबूती देती है, वह सच और झूठ के बीच अंतर समझने की शक्ति भी देती है । अधिक महत्वपूर्ण सच्चाई को केवल परमेश्वर के प्रकटीकरण द्वारा प्रमाणित किया जाता है । हमारे मानवीय तर्क और शारीरिक चेतनाओं का उपयोग पर्याप्त नहीं है । हम ऐसे समय में रहते हैं जब अति बुद्धिमान व्यक्ति के लिये भी सत्य और चालाकी-भरे धोखे में भेद कर पाना कठिन है ।

प्रभु ने अपने प्रेरित थोमा, जोकि उद्धारकर्ता के पुनरूत्थान की सच्चाई को परखने के लिये उसके घावों को छूना चाहता था, को सीखाया था, कि प्रकटीकरण सुरक्षित सबूत है: यीशु ने उससे कहा, ''तूने तो मुझे देखकर विश्वास किया है, धन्य हैं वे जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया'' (यहून्ना 20:29) ।

वे सच्चाइयां जो परमेश्वर के पास घर जाने का मार्ग दिखाती हैं पवित्र आत्मा द्वारा प्रमाणित की जाती हैं । हम उपवन जाकर और पिता और पुत्र को बालक जोसफ स्मिथ से बात करते नहीं देख सकते । न कोई बाह्य प्रमाण और न ही कोई तार्किक बहस साबित कर सकती है कि एलिय्याह पौरोहित्य कुंजियां प्रदान करने आया था जैसा कि वादा किया गया था, जो अब जीवित भविष्यवक्ता थॉमस एस. मॉनसन के पास हैं और उनके द्वारा इसका उपयोग किया जाता है ।

सच्चाई की पुष्टिकरण परमेश्वर के बेटे या बेटी को मिलती है जो पवित्र आत्मा को पाने के अधिकार का दावा करते हैं । जबकि असत्य और झूठ हमें कभी भी प्रस्तुत किये जा सकते हैं, हमें सच्चाई की आत्मा के निरंतर प्रभाव की आवश्यकता है जो संदेह के क्षणों से दूर रखेगा ।

जब बारह प्रेरितों की परिषद के एक सदस्य, जार्ज क्यू. कैनन ने जोर दिया था कि हम हमेशा आत्मा को हमारे साथ होने का प्रयास करें । उन्होंने वादा किया था, और मैं भी इसका वादा करता हूं, कि यदि हम उस मार्ग पर चलते हैं, तो हमें ''सच्चाई की समझ की कभी कमी नहीं होगी,'' ''कभी संदेह या अंधकार में नहीं होंगे,'' और हमारा ''विश्वास मजबूत, हमारा आनंद परिपूर्ण होगा ।''[2]

हमें पवित्र आत्मा की संगति से निरंतर मदद की आवश्यकता एक अन्य कारण से भी है ।

किसी प्रियजन की मृत्यु अनपेक्षितरूप से हो सकती है । यह पवित्र आत्मा से प्रेमी परमेश्वर और उसके पुनाजीवित उद्धारकर्ता की सच्चाई का प्रमाण है जो हमें प्रियजन के खोने पर आशा और दिलासा देती है । यह गवाही उस समय हमारे पास होनी चाहिए जब किसी प्रियजन की मृत्यु होती है ।

तो, कई प्रमाणों में, हमें पवित्र आत्मा की निरंतर संगति की आवश्यकता है । हम इसकी इच्छा करते हैं, लेकिन फिर भी हम अनुभव से जानते हैं कि ऐसा करना सरल नहीं है । हम में से प्रत्येक, अपने प्रतिदिन के जीवन में कुछ ऐसा सोचता, बोलता और करता है जो आत्मा को बुरा लगता है । प्रभु ने हमें सीखाया था कि पवित्र आत्मा हमारी स्थाई साथी बनेगी जब हमारे हृदय प्रेम से भरे होते हैं और जब सदगुण हमारे विचारों को निरंतर संवारते हैं (देखें सिऔरअ 121:45) ।

जो उच्च आदर्श के साथ संघर्ष कर रहे हैं उन्हें आत्मा की संगति के उपहार के योग्य होने की आवश्यता है, मैं इसके लिये प्रोत्साहन देता हूं । आपके पास ऐसे क्षण होंगे जब आपने पवित्र आत्मा के प्रभाव को महसूस किया था । हो सकता है यह आज हुआ हो ।

आप प्रेरणा के उन क्षणों को विश्वास के बीच के समान सोच सकते हो जैसा अलमा बोलता है (देखें अलमा 32:28) । प्रत्येक बीज को बोएं । आप ऐसा उन प्रेरणा के अनुसार कार्य कर सकते हैं जो आपने महसूस किये हैं । यदि यह दसमांश देना है, तो इसे दें । यह कुछ भी हो, इस करें । और करते रहें । जब आप आज्ञा का पालन करने की अपनी इच्छा प्रकट करते हैं, तब आत्मा उन को प्रेरणाएं भेजती है जो परमेश्वर चाहता है कि आप करें ।

जब आप आज्ञा पालन करते हैं, तब आत्मा से प्रेरणाएं बार-बार आएंगी, नजदीक और नजदीक स्थाई संगति की ओर । आपकी सही चुनने की शक्ति का विकास होगा ।

आप जान सकते हैं कब कार्य करने की प्रेरणाएं आत्मा से हैं और कब ये स्वयं आपकी इच्छाएं हैं । जब प्रेरणाएं उद्धारकर्ता और उसके जीवित भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों के वचनों के अनुरूप होती हैं, तब इनका पालन आत्म-विश्वास के साथ करने का चुनाव कर सकते हो । फिर प्रभु आपकी सेवा के लिये उसकी आत्मा भेजेगा ।

उदाहरण के लिये, यदि आप सब्त के दिन का आदर करने के लिये आत्मिक प्रेरणा प्राप्त करते हो, विशेषकर जब ऐसा करना कठिन लगता है, परमेश्वर अपनी आत्मा मदद के लिये भेजेगा ।

यह मदद मेरे पिता को सालों पहले मिली थी जब वह काम के कारण आस्ट्रेलिया गये थे । एक रविवार को वह अकेले थे, और प्रभु-भोज लेना चाहते थे । उन्हें अंतिम-दिनों के संतों की सभा के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल पाई थी । तो उन्होंने पैदल चलना आरंभ कर दिया । हर चौराहे पर वह प्रार्थना करते जाते थे कि किस ओर जाना है । एक घंटे तक चलने और कई मोड़ मुड़ने के बाद, वह प्रार्थना करने के लिये ठहरे । उन्हें एक विशेष मार्ग पर मुड़ने की प्रेरणा मिली । जल्द ही उन्हें नजदीक के घर से गाने की आवाज सुनाई देने लगी । उन्होंने खिड़की से अंदर झांका और कुछ लोगों को सफेद चादर से ढकी मेज और प्रभु-भोज ट्रे के पास बैठे देखा ।

अब, यह आपको अधिक दिलचस्प न लगे, लेकिन उनके लिये यह बहुत शानदार था । वह जानते थे प्रभु-भोज की प्रार्थना का वादा पूरा हुआ थाः सदा उसे याद रखने, और उन आज्ञाओं को मानने के इच्छुक हैं जो उसने उन्हें दी हैं, ताकि उनके साथ उसकी आत्मा सदा के लिये रह सके (सिऔरअ 20:77) ।

यह केवल एक समय का उदाहरण था जब उन्होंने प्रार्थना की और वैसा ही किया जैसा आत्मा ने कहा कि परमेश्वर उनसे क्या करवाना चाहता था । उन्होंने सालों तक इसका पालन किया, जैसा आप और हम करेंगे । उन्होंने कभी अपनी आत्मिकता के विषय में बात नहीं की । वह केवल प्रभु के लिये छोटे-छोटे कार्य करते रहे जिसे करने की प्रेरणा उन्हें मिलती थी ।

जब कभी कुछ अंतिम-दिनों के संतों के समूह ने उनसे बोलने को कहा, उन्होंने ऐसा किया । बेशक सुनने वाले 10 लोग हों या 50 या फिर वह कितने थके क्यों न हों । उन्होंने पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा और भविष्यवक्ता की अपनी गवाहीदीजब कभी आत्मा ने उन्हें ऐसा करने के लिये कहा ।

गिरजे में उनकी उच्चतम नियुक्ति बोनेविल यूटाह स्टेक उच्च परिषद में थी, जहां उन्होंने स्टेक फार्म में जंगली घास उखाड़ी और रविवार विद्यालय कक्षा को सीखाया था । सालों तक, जब उन्हें इसकी आवश्यकता हुई, पवित्र आत्मा उनके साथी के रूप में वहीं थी ।

अस्पताल के कमरे में मैं अपने पिता के बगल में खड़ा था । मेरी मां, उनकी 41 वर्ष की पत्नी, बिस्तर पर लेटी थी । हम उनको घंटो तक देखते रहे । उनके चेहरे से हमने दर्द की अभिव्यक्ति को गायब होते देखा । उनके हाथों की उंगलियां, जोकि मुठ्ठियों में जकड़ी हुई थी, शिथिल हो गई । उनके बाहें उनके बगल मे शक्तिहीन हो गई ।

कई वर्षों के कैंसर का दर्द समाप्त हो रहा था । मैंने उनके चहरे पर शांति देखी । उन्होंने कुछ सांसें ली, फिर अंतिम सांस, और फिर शरीर शांत हो गया । हम वहां खड़े देख रहे थे शायद दुबारा सांस आये ।

अंत में, पिता ने शांति से कहा, ''मां घर वापस चली गई ।''

उन्होंने कोई आंसु नहीं बहाये । ऐसा इसलिये क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें बहुत पहले ही यह स्पष्ट समझ दे दी थी कि वह कौन थी, कहां से आई थी, वह क्या बनी, और कहां जा रही थी । आत्मा ने उन्हें कई बार प्रेमी स्वर्गीय पिता की, उद्धारकर्ता की जिसने मृत्यु के बंधनों को तोड़ा था, और मंदिर मुहरबंदी की सच्चाई की जो उन्होंने अपनी पत्नी और परिवार के साथ बांटा, की गवाही दी थी ।

आत्मा ने काफी पहले उन्हें सुनिश्चित किया था कि मां की भलाई और विश्वास ने उन्हें स्वर्गीय घर में वापस जाने के योग्य बनाया था जहां उन्हें प्रतिज्ञा एक बेमिसाल बच्ची के रूप में याद और आदर के साथ स्वागत किया जाएगा ।

मेरे पिता के लिये, यह आशा से बहुत अधिक था । पवित्र आत्मा ने उनके लिये इसे सच किया था ।

अब, कुछ कह सकते हैं कि उनके मन में स्वर्गीय घर के विषय में उनके शब्द और चित्र केवल मधुर भावनाएं थी, एक पति की उसकी पत्नी की मृत्यु पर उदास विचार थे । लेकिन वह अनंत सच्चाई को इस तरह जानते थे जिस तरह आप इसे जान सकते हैं ।

वह एक वैज्ञानिक थे जिन्होंने अपने संपूर्ण वयस्क जीवन-भर भौतिक संसार की सच्चाई की खोज की थी । उन्होंने विज्ञान के उपकरणों का पर्याप्त उपयोग किया था, जिसके कारण संसार-भर में उनके साथी उनका आदर करते थे । अधिकतर जो भी उन्होंने रसायन शास्त्र में अणुओं की गति के संबंध में किया उसे पहले उन्होंने अपनी मन की आंखों से देखा और फिर उसी के अनुसार प्रयोगों द्वारा प्रयोशाला में साबित किया ।

लेकिन उन्होंने उन सच्चाइयों की खोज करने के लिये जो उनके और हमारे लिये बहुत महत्व रखती हैं, भिन्न मार्ग का अनुसरण किया । केवल पवित्र आत्मा के द्वारा हम लोगों और घटनाओं को उस तरह देखते हैं जैसे परमेश्वर देखता है ।

यह उपहार उनकी पत्नी की मृत्यु के बाद जारी रहा था । हमने घर जाने के लिये मां के सामान को इकट्ठा किया । पिता घर जाते हुए कार रोककर प्रत्येक नर्स और डॉक्टर का धन्यवाद किया, जिससे भी हम रास्ते में मिले थे । मुझे याद है कि मैंने महसूस किया था कि हमें अपने दुख में अकेला छोड़ दिया जाना चाहिए ।

अब मैं महसूस करता हूं कि उन्होंने चीजों को उस तरह देखा जिस तरह पवित्र आत्मा उन्हें दिखा सकती थी । उन्होंने उन लोगों को उनकी प्रिय पत्नी के देखभाल करने के लिये परमेश्वर द्वारा भेजे गये फरिशतों के रूप में देखा था । हो सकता है उन्होंने स्वयं को पेशेवर स्वास्थ्य कामगार के रूप में देखा हो, लेकिन पिता उद्धारकर्ता की ओर से उनको धन्यवाद दे रहे थे ।

पवित्र आत्मा का प्रभाव उनके साथ घर पहुंचने तक जारी रहा । हमने कुछ देर बैठक में बातें की । पिता जी अपने बगल के कमरे में चले गये ।

कुछ मिनट के बाद, वह वापस बैठक में आ गये । उनके चहरे पर सुखद मुस्कान थी । वह पास आए और धीरे से बोले, ''मुझे चिंता हो रही थी मिलड्रेड आत्मिक संसार में अकेले पहुंचेगी । मुझे लगा वह भीड़ में खोया हुआ महसूस कर सकती है ।''

फिर उन्होंने आनंद से कहा, ''मैंने अभी प्रार्थना की है । मैं जानता हूं मिलड्रेड बिलकुल आराम से है । उससे मिलने के लिये मेरी मां वहां हैं ।''

मुझे याद है वह मुस्करा रहे थे जब उन्होंने कहा था, मैं कल्पना करने लगा मेरी दादी, अपने छोटे पांवों से भीड़ के बीच दौड़ते हुई अपनी बहु से मिलने और गले लगाने जा रही है, जब वह वहां पहुंचती हैं ।

अब, मेरे पिता का पूछना और उस दिलासा को प्राप्त करने के कारणों में से एक था कि वह बचपन से हमेशा विश्वास से प्रार्थना करते आये थे । वह उन उत्तरों को पाने के आदी हो गए थे जो उनके हृदय में दिलासा और दिशा देते थे । प्रार्थना करने के अतिरिक्त, वह धर्मशास्त्रों और जीवित भविष्यवक्ताओं के वचनों को जानते थे । इसलिये वह आत्मा की परिचित प्रेरणाओं को पहचानते थे ।

आत्मा की संगति उनके लिये दिलासा और मार्गदर्शन से अधिक थी । इसने उन्हें यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा बदल दिया था । जब हम आत्मा को हमारे साथ हमेशा होने की प्रतिज्ञा को स्वीकार कर लेते हैं, तो उद्धारकर्ता हमारा पवित्रकरण कर सकता है जो अनंत जीवन, सर्वोत्तम उपहार लिये चाहिए (देखें सिऔरअ 14:7) ।

आप उद्धारकर्ता के वचन याद करते हैं: जब यह आज्ञा : संसार के सभी छोर के लोगों, पश्चाताप करो, और मेरे पास आओ और मेरे नाम में बपतिस्मा लो जिससे कि पवित्र आत्मा के स्वीकारे जाने से तुम्हारा पवित्रकरण हो सके, ताकि अंतिम दिन में तुम मेरे समक्ष निर्दोष खड़े रह सको (3 नफी 27:20) ।

ये आज्ञाएं प्रभु से इस प्रतिज्ञा के साथ आती हैं:

"और अब, मैं तुम से सच, सच कहता हूं, अपना भरोसा उस आत्मा में रखो जो भलाई करने की ओर ले जाती है–हां, न्याय से कार्य करने, विन्रमता से चलने, धार्मिकता से न्याय करने, और यह मेरी आत्मा है ।

"मैं तुम से सच, सच कहता हूं, मैं तुम्हें अपनी आत्मा प्रदान करूंगा, जो तुम्हारे मन को आलोकित करेगी, जो आत्मा को आनंद से भर देगी'' (सिऔरअ 11:12–13) ।

मैं आपको अपनी गवाही देता हूं कि पिता परमेश्वर जीवित है, कि पुनाजीवित यीशु मसीह अपने गिरजे का मार्गदर्शन करता है, कि थॉमस एस. मॉनसन के पास पौरोहित्य की सारी कुंजियां हैं, और कि पवित्र आत्मा द्वारा प्रकटीकरण आंतिम-दिनों के संतों के यीशु मसीह के गिरजे, और इसके विन्रम सदस्यों का मार्गदर्शन और समर्थन करती है ।

मैं आपको इन शानदार व्यक्तियों की गवाही देता हूं जो हमसे प्रभु यीशु मसीह के गवाहों, बारह प्रेरितों की परिषद के सदस्यों के रूप में बोल रहे हैं, ये परमेश्वर द्वारा नियुक्त किये गए हैं । मैं जानता हूं, कि आत्मा ने इन्हें नियुक्त करने के लिये अध्यक्ष मॉनसन का मार्गदर्शन किया था । और जब आप इन्हें और इनकी गवाहियों को सुनते हैं, पवित्र आत्मा आपको प्रमाणित करती हैं जो मैं आप से अब बोलता हूं । ये परमेश्वर द्वारा नियुक्त किये गए हैं । मैं इनका समर्थन और इनसे प्रेम करता हूं और जानता हूं कि प्रभु इनसे प्रेम करता है और इनकी सेवकाई में इनका समर्थन करेगा । और यह मैं मसीह के नाम में करता हूं, आमीन ।

विवरण

1. Handbook 2: Administering the Church (2010), 20.3.10 ।
2. देखें George Q. Cannon, in "Minutes of a Conference," *Millennial Star,* May 2, 1863, 275–76 ।

© 2015 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमति : 6/15 । अनुवाद अनुमति : 6/15 ।
Visiting Teaching Message, November 2015 का अनुवाद । Hindi । 12591 294